भगवान परम स्वतंत्र है।
भगवान क्रित दास है।

भगवान सब को नियंत्रित करता है। भगवान को कोई नियंत्रित नहीं करता। भगवान जो चाहता है वह करने के लिए स्वतंत्र है, जो ना चाहे वह न करने के लिए स्वतंत्र है, जो उल्टा चाहे तो उल्टा करने के लिए स्वतंत्र है। वह जो चाहे वो करने के लिए स्वतंत्र है। उदाहरण के लिए, ईश्वर चाहे तो आँखों से देखता है, ना चाहे तो आँखों से नहीं देखता है। इतना तो हम लोग भी कर सकते है। लेकिन ईश्वर बिना आँखों के देख सकता है (उल्टा कर्म) या ईश्वर आँखों से बात कर सकता है, ईश्वर आंखों से पकड़ सकता है, ईश्वर आंखों से छू सकता है, ईश्वर आंखों से सांस ले सकता है, ईश्वर सभी इंद्रियों की सभी क्रियाओं किसी भी इंद्रिय से कर सकता है। इतनाही नही, ईश्वर बगैर इंद्रियों के भी सब इंद्रियों के कार्य कर सकता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह 'अलौकिक करणी' या 'ईश्वर की अकल्पनीय क्रियाएं' है। इस प्रकार ईश्वर कुछ भी करने के लिए या सब कुछ करने के लिए या कुछ भी ना अकल्पनीय तरीकों से करने के लिए स्वतंत्र है। इसलिए ईश्वर परमस्वतंत्र है।

लेकिन भगवान अपने भक्तों के गुलाम हैं। वह कहते हैं, 'यह कहा जाता है कि मैं स्वतंत्र हूं लेकिन वास्तव में मैं अपने भक्त की इच्छा के अनुसार चलता हूं।'

भगवान संतों के गुलाम हैं क्योंकि संत के पास एक शक्ति है - 'दिव्य प्रेम' जो भगवान को बंधन में बांधता है

जिसे भगवान तोड़ नहीं सकते और इसलिए अपने भक्तों की इच्छा के अनुसार व्यवहार करते हैं।

दिव्य प्रेम की साकार स्वरूपा श्रीराधा है। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण श्रीराधा की चाकरी करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस प्रकार
भगवान परम स्वतंत्र है।
भगवान क्रित दास है।